नई कहानी नए सवाल

सत्यकाम

नई कहानी : नए सवाल

डॉ. सत्यकाम

ऋत्विक-ऋषिता को

अनुक्रम

हिंदी कहानी का विकास	:-	7
नए सवाल उठाती कहानियाँ	:-	35
जिंदगी और जोंक : अमरकांत	:-	46
मछलियाँ : उषा प्रियवंदा	:-	58
मेरा दुश्मन : कृष्ण बलदेव वैद	:-	66
बादलों के घेरे : कृष्णा सोबती	:-	70
खोई हुई दिशाएँ : कमलेश्वर	:-	74
गुलकी बन्नो : धर्मवीर भारती	:-	79
परिन्दे : निर्मल वर्मा	:-	85
सामान : प्रयाग शुक्ल	:-	91
तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम : फणीश्वरनाथ रेणु	:-	94
चीफ की दावत : भीष्म साहनी	:-	103
यही सच है : मन्नू भंडारी	:-	108
दूध और दवा : मार्कण्डेय	:-	114
एक और जिंदगी : मोहन राकेश	:-	118
विजेता : रघुवीर सहाय	:-	128
शबरी : रमेश बक्षी	:-	131
टूटना : राजेन्द्र यादव	:-	136
सेलर : रामकुमार	:-	145
एक नाव के यात्री : शानी	:-	149

नन्हों : शिवप्रसाद सिंह :- 156

बदबू : शेखर जोशी :- 162

प्रेत मुक्ति : शैलेश मटियानी :- 167

भोलाराम का जीव : हरिशंकर परसाई :- 173

संदर्भ ग्रंथ सूची :- 179

पुरोवाक्

यह पुस्तक हिंदी कहानी, और खासकर नई कहानी, को समझने का विनम्र प्रयत्न है। पाठक को ध्यान में रखे बिना पुस्तक लिखना अरण्यरोदन के अतिरिक्त कुछ नहीं। यह पुस्तक मैंने खास तौर पर हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों और उन जिज्ञासुओं के लिए लिखी है जो हिंदी कहानी को जानना-समझना चाहते हैं।

'नई कहानी' नए सवालों से जूझती है। ये सवाल आधुनिकता की उपज हैं। स्त्री-पुरुष संबंध, नारी का सबलीकरण, दलितों की जागरूकता, शहर में अकेलेपन का दंश झेलता मनुष्य, प्रेम की पीड़ा को इस काल के कहानीकारों ने नई दृष्टि से देखा, महसूसा और परोसा है।

पुस्तक के 'हिंदी कहानी के विकास' शीर्षक प्रथम लेख में हिंदी कहानी के विकास और सामान्य विशेषताओं पर गौर किया गया है। इसमें माधवराव सप्रे की 'एक टोकरी मिट्‌टी' से लेकर अरूण प्रकाश की सद्य : प्रकाशित ‘गज-पुराण' तक हिंदी कहानी की यात्रा को दर्शाया गया है। इसमें हिंदी कहानी में हुए परिवर्तनों पर भी विचार किया गया है। दूसरे लेख में 'नई कहानी : नए सवाल' में नई कहानी की विशेषताओं ओर उसके 'नएपन' का विवेचन किया गया है। नए कहानीकारों का यथार्थ बोध प्रेमचंद, प्रसाद और यशपाल से भिन्न है। यह भिन्नता कथ्य और शिल्प दोनो ही स्तरों पर दृष्टिगोचर होती है। नए कहानीकारों ने कहानी कहने का अंदाज ही बदल दिया। इन्हीं बिंदुओं पर इसमें विचार किया गया है।

इसके बाद बाईस 'नई कहानियों' का विश्लेषण किया गया है। ये सभी कहानियाँ राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'एक दुनिया समानान्तर' में संकलित हैं। मेरी समझ से यह नई कहानी का सर्वोत्तम संकलन है। इसी समझ के आधार पर मैंने इस संकलन को अपने विश्लेषण का आधार बनाया। इसके लिए मैं राजेंद्र यादव का आभारी हूँ।

मैं पुस्तकें लिखने से भरसक बचता हूँ। गिनती गिनाने के लिए किताब लिखूँ, दिल नहीं करता। एक दिन अनुपम प्रकाशन, पटना के अनूप जी के सामने बैठा था। वहाँ लिखने-लिखाने की चर्चा छिड़ गई। ‘'क्या लिख रहे हैं आजकल’' का रस्सी सवाल मेरी और फेंका गया। झेंपते हुए मैंने कहा 'कुछ भी तो नहीं।' अनूप जी मुझे घेरने का प्रयत्न करने लगे। 'तो फिर हिंदी कहानी पर एक किताब तैयार कर दीजिए। आजकल बहुत विद्यार्थी